2 दिसम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महावीर निर्वाणोत्सव संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में दिनांक 27 से 31 अक्टूबर 2016 तक महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक व्याख्यानमाला एवं महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा महावीर निर्वाणोत्सव एवं प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, ब्र.हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित दिनेशभाई व डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई के व्याख्यानों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी के निर्देशन में पण्डित अनिलजी धवल व पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये।

ऑन लाइन संगोष्ठी : अभिनव प्रयोग

सीमंधर जिनालय भीलवाड़ा की ओर से रविवार दिनांक 20 नवम्बर 2016 को ऑन लाइन संगोष्ठी अन्तरराष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रवचनकार डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसका विषय था 'पाके नर तन क्या खोया क्या पाया'।

इस अवसर पर मुख्य वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. सुदीपजी दिल्ली, डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली, श्री अखिलजी बंसल जयपुर, डॉ. जिनेन्द्रजी उदयपुर, श्री अजितजी बड़ौदा, श्रीमती सुरभि खंडवा, श्री भारतभूषणजी अलवर, श्री अभिलाषजी शास्त्री कोटा, मंगलार्थी सुलभ झांसी, महावीरजी सुकुमालजी, श्रीमती सरिता-पवनजी चौधरी भीलवाड़ा आदि 27 विद्वानों और साधर्मी भाई-बहनों ने भाग लिया।

नरक निगोद से निकलकर नर तन मिलना दुर्लभ है। सभी प्रकार का सुयोग मिलने पर भव के अभाव का ही पुरुषार्थ करना चाहिये। बुद्धिपूर्वक सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के सान्निध्य में रहकर तत्त्वाभ्यास कर तत्त्वनिर्णय ही करने योग्य है। त्रस पर्याय का यह अन्तिम भव हुआ तो फिर यह नर तन मिलना भी मुश्किल है। बारम्बार इसका चिन्तन करना चाहिये।

गोष्ठी का मंगलाचरण मंगलार्थी चिद्रूप मौ और भव्या चौधरी भीलवाड़ा ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन (प्रिंसिपल), भीलवाड़ा ने एवं संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने किया।

अष्टाह्निका पर्व संपन्न

(1) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्रीमती सुशीलाबेन नवीनभाई तेजानी परिवार अमेरिका के विशेष सहयोग एवं मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(MONA)** के आयोजकत्व में श्री प्रवचनसार मंडल विधान एवं सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं ब्र. हेमचंदजी 'हेम' के अतिरिक्त युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित चेतनभाई शाह राजकोट एवं पण्डित प्रकाशभाई शाह कोलकाता आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। सभी विद्वानों द्वारा समयसार ग्रन्थाधिराज के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। सभी ने मिलकर 8 दिनों में इस सम्पूर्ण अधिकार का मर्म बताया।

ज्ञातव्य है कि 'मोना' द्वारा यह शिविर आदरणीय जुगलकिशोरजी 'युगल' की स्मृति में आयोजित किया गया था, जिसमें उनके द्वारा किये गये तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में योगदान हेतु को दो दिन विशेष रूप से ब्र.निलिमा जैन कोटा द्वारा बताया गया।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न कराये गये। **- अमृतभाई**

(2) मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर विभिन्न उपनगरों के अन्तर्गत **सीमंधर जिनालय** में पण्डित सुबोधजी सिवनी, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित अश्विनभाई शाह, **भायंदर** में पण्डित निर्मलजी जैन सागर, **दादर** में ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल', **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित विपिनजी जैन मुम्बई, **बोरीवली** में पण्डित अनिलभाई शाह एवं **दहीसर** में पण्डित राजेशभाई शेठ द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पुरानी मंडी स्थित श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के श्री सीमंधर जिनालय में दिनांक 7 से 14 नवम्बर तक राजमलजी पवैया द्वारा रचित श्री पंचमेरु एवं नंदीश्वर विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित मनोजकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा समयसार एवं परमार्थवचनिका पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी द्वारा श्रीमती सरोज पाण्ड्या एवं अर्चनाजी जैन के सहयोग से संपन्न हुये।**- प्रकाशचंद पाण्ड्या**

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आज विज्ञान फूला नहीं समा रहा था, यह प्रश्न उसके मन को बहुत समय से कचोट रहा था, उसका तर्क, युक्ति व आगम के आधार पर जो समाधान मिला; उससे वह पूर्ण प्रसन्न और सन्तुष्ट था।

दूसरे दिन प्रवचन से पूर्व ही अनुमति लेकर विज्ञान ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए एक प्रश्न और किया –''महाराज ! आगम में आये परस्पर विरोधी कथनों का सामंजस्य किस प्रकार संभव है ?''

इस तथ्य को समझाते हुए आचार्यश्री ने कहा –''भाई ! ऊपर से परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले कथन भी वस्तुत: परस्पर विरोधी नहीं होते; क्योंकि दोनों कथनों के प्रयोजन बिलकुल पृथक्-पृथक् होते हैं।

कथाओं के माध्यम से कथाकार अज्ञानी जीवों को सन्मार्ग या मोक्षमार्ग में लगाना चाहता है; अत: स्वर्गादिक की प्राप्ति में अनेक कारणों के होते हुए भी मोक्षमार्ग के नेता पंचपरमेष्ठी में श्रद्धा उत्पन्न कराने के लिए पंचपरमेष्ठी के वाचक णमोकार मंत्र को सुनने रूप निमित्त पर ही जोर देता है। अन्य कारणों को गौण कर देता है।

कथाकार सोचता है कि यदि इस कथा को पढकर पाठक को अरहंतदेव एवं आचार्य उपाध्याय व साधु परमेष्ठी पर श्रद्धा हो गई तो फिर वह उनकी आराधना भी करने लगेगा और उनकी वाणी भी सुनने लगेगा। ऐसा करने से उसे स्वत: सन्मार्ग मिल जायेगा।

इसी प्रयोजन से कथा-पुराणों में कहा गया है कि णमोकार मंत्र के श्रवणमात्र से ही उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हुई है, अन्य कोई प्रयोजन नहीं है। कथाकार का अभिप्राय सही होने से कथा में आए सभी कथन सत्य ही कहे जाते हैं, यथार्थ ही माने जाते हैं।

पंचपरमेष्ठी रूप सद्निमित्तों से दूर रहने वाले संसारी जीव ऐसा कहे बिना उन सद्निमित्तों से पास ही नहीं आते। इसी कारण णमोकार मंत्र से सम्बन्धित कथाओं में णमोकार मंत्र के स्मरणादि को ही सारा श्रेय दिया गया है और अन्य सभी अंतरंग कारणों को गौण रखा गया है।

इसके अतिरिक्त एक कारण यह भी है कि अन्य अंतरंग कारण बाहर से प्रगट दिखाई हीं नहीं देते, अत: उन्हें श्रेय देना संभव भी नहीं है।

पाण्डवपुराण, पद्मपुराण एवं पार्श्वपुराण आदि में भी जो यह कहा गया है कि परमेष्ठी पद में विराजमान आत्माओं को भी संकट का सामना करना पड़ा, उसका भी यही प्रयोजन है कि यदि कोई निकट भव्य जीव अपनी अज्ञानमय पूर्वपर्याय में पापाचरण या पापभाव करता है तो उसे उसका फल भोगना ही पड़ता है। चाहे बाद में वह कितना ही बड़ा धर्मात्मा क्यों न हो जावे ? अत: जिसे संकटों में पड़ना स्वीकार न हो, तो दारुण दु:खों से बचा रहना चाहता हो; उसे पापाचरण से तो बचना ही चाहिए न !

दोनों ही तरह के कथानकों का उद्देश्य और अभिप्राय सत् व सत्य होने से कोई भी कथन आगमविरुद्ध व परस्पर विरोधी नहीं है।

यदि वस्तुत: कारण-कार्य की मीमांसा की जाय तब तो प्रत्येक कार्य के सम्पन्न होने में अनेक कारण विद्यमान रहते हैं; किन्तु श्रेय केवल बाह्य निमित्त कारण को ही दिया जाता है, क्योंकि निमित्त रूप से भी किसी के द्वारा किये गये उपकार को सज्जन भूलते नहीं हैं। कहा भी है –''नहि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति''।

देखो, उन बंदर, बकरा, हथिनी आदि जीवों को जो स्वर्गादि की प्राप्ति हुई, उसमें णमोकार मंत्र का सुनना तो मात्र निमित्त कारण था। साथ में उन जीवों की होनहार भी वैसी ही थी तथा उनके परिणामों की विशुद्धि (कषाय की मंदता) भी ऐसी हो गई थी कि उन परिणामों से देवगति का बंध हो, अन्य नरकादि गति का नहीं एवं काललब्धि भी वैसी ही आ गई थी। इस कारण उसके परिणाम भी उसी जाति के हुए, जिनसे सद्गति होती है। साथ में निमित्तरूप में णमोकार मंत्र भी कान में पड़ गया था और उस पर विचार करके अरहंतादि के प्रति भक्ति श्रद्धा भी हो गई थी।

इसप्रकार जब सभी कारण मिलते हैं काम तो तब होता है, परन्तु कथन करने में अधिकतर निमित्त की ही मुख्यता रहती है। अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। अत: स्वाध्याय के समय इस बात का ध्यान रखना बहुत आवश्यक होता है कि कहाँ/किस अपेक्षा से कथन किया गया है, किसको मुख्य व किसको गौण किया गया है। ध्यान रहे, जिसे गौण किया हो, उसका निषेध नहीं मान लेना चाहिए।''

आचार्यश्री के इस प्रवचन से सभी श्रोतागण प्रथमानुयोग का स्वरूप, उसके कथन करने की पद्धति और प्रयोजन जानकर मन ही मन भारी प्रसन्न हुए और प्रवचन की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने घर चले गये।

आचार्यश्री के सरल सुबोध शैली में हुए आध्यात्मिक प्रवचनों ने नगर में धूम मचा दी थी। उनके प्रवचनों में क्या अनपढ-क्या

पढे लिखे, क्या बालक-क्या वृद्ध, क्या स्त्रियाँ-क्या पुरुष, क्या जैन-क्या अजैन, क्या नेता-क्या अभिनेता - सभी समय पर पहुँच जाते थे; क्योंकि उनके प्रवचनों में सभी को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार तत्त्वज्ञान का लाभ मिल रहा था।

कठिन से कठिन विषय को सरल से सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत करना उनके प्रवचनों की विशेषता थी।

आज आचार्यश्री के प्रवचन का विषय णमोकार महामंत्र की कथाओं के पढने से उत्पन्न हुई विज्ञान की शंकाओं का समाधान करना था। उन्होंने सोचा -''विज्ञान जैसे और भी अनेक परीक्षा प्रधानी पाठकों को ये शंकायें होना स्वाभाविक है; अत: क्यों न प्रवचन में ही इस विषय को स्पष्ट कर दिया जाये, ताकि सभी का एक साथ समाधान हो जाये।''

आचार्यश्री ने प्रवचन की पृष्ठभूमि बनाते हुए कहा -''कल विज्ञान ने प्रवचन के बाद णमोकार महामंत्र के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण शंकाओं का समाधान चाहा था; पर समयाभाव से कल वह चर्चा नहीं हो सकी तथा यह भी सोचा कि आप लोगों को भी संभवत: ये शंकायें हो सकती हैं। वैसे भी णमोकार महामंत्र जैसे विषय की यथार्थ जानकारी अति आवश्यक है। अत: आज के प्रवचनों में इसी विषय पर चर्चा होगी।''

प्रवचन प्रारम्भ करते हुए आचार्यश्री ने कहा - ''इस णमोकार मंत्र में उन पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है, जिनमें कुछ तो पूर्ण वीतरागी हैं और कुछ वीतरागता के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हैं तथा जिन्हें यह देखने-सुनने की फुरसत ही नहीं है कि उन्हें कौन नमस्कार कर रहा है और कौन नहीं कर रहा है?

अरहंत व सिद्ध भगवान पूर्ण वीतरागी हैं, उन्हें तो तुम्हारे नमस्कार से कोई प्रयोजन ही नहीं है तथा जो एकदेश वीतरागी हैं, उन आचार्य, उपाध्याय व साधु परमेष्ठी को भी किसी के नमस्कार करने न करने से कोई मतलब नहीं है।

इस महामंत्र में पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करने के सिवाय न तो किसी लौकिक कार्य विशेष के करने-कराने या होने की गारंटी दी गई है और न कहीं कोई आश्वासन ही दिया गया है। हाँ, एक यह गारंटी अवश्य दी है कि जो व्यक्ति इस महामंत्र का स्मरण करेगा, उसमें कहे गये पंचपरमेष्ठी के स्वरूप का बारम्बार विचार करेगा; उसके मन में उस समय कोई पापभाव उत्पन्न ही नहीं होगा। अर्थात् उसके उस समय होने वाले सब पापों का नाश (अभाव) हो जायेगा। वह परमात्मा की तरह ही बाहर और भीतर से पवित्र हो जायेगा।

इस गारंटी की सीमा भी ध्यान में रखो, नहीं तो धोखा हो जायेगा। केवल इतनी गारंटी है कि जब तक मन में पंचपरमेष्ठी का स्मरण रहेगा तब तक पापभाव पैदा नहीं होंगे, आगे-पीछे की उसकी कोई गारंटी नहीं है, भूतकाल में किये गये पापों का फल भी भोगना पड़ सकता है।

इस महामंत्र की महानता के संबंध में समय-समय पर प्रचारित कथा कहानियों से जहाँ एक ओर जैनजगत में इसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई है और जिज्ञासा जगी है, वहीं दूसरी ओर भ्रांत धारणायें भी कम प्रचलित नहीं हुई हैं। भ्रांत धारणाओं के लिए इस महामंत्र के सही स्वरूप का जितना भी अनुशीलन/परिशीलन किया जाये, कम ही है।

देखो, अविवेक की महिमा ! अविवेकियों की वणिक वृत्ति ने परमपूज्य पंचपरमेष्ठियों के साथ भी सौदेबाजी शुरू कर दी और वह भी अविश्वास की भाषा में ! पहले पंचपरमेष्ठी परमात्मा इसका काम करें, तब बाद में यह उन्हें छत्र चढायेगा, विधान करायेगा, मंदिर बनवा देगा, उनके तीर्थ की यात्रा पर जायेगा और न जाने क्या-क्या करेगा उनके लिए ? पर करेगा तब, जब पहले इसका काम हो जाएगा। क्या भरोसा भगवान का ? बाद में काम किया न किया ?''

आचार्यश्री ने भक्तों की सौदेबाजी के कुछ नमूने प्रस्तुत करते हुए आगे कहा -

श्री महावीरजी में उल्टे हाथे लगाती हुई एक बहिन कहती है - 'हे चांदनपुर के बाबा ! यदि मेरे बच्चा हो गया तो मैं आपको छत्र चढाऊँगी और दुबारा आकर सीधे हाथे लगाऊँगी।'

दूसरा भाई कहता है -'यदि मैं मुकदमा जीत गया तो तीर्थयात्रा पर जाऊँगा और सब तीर्थों पर पूजा-पाठ रचाऊँगा।'

तीसरा भगत कहता है -'यदि मेरी बीमारी ठीक हो गई तो ऐसे ठाठ-बाट से सिद्धचक्र पाठ करूँगा कि लोग देखते रह जायेंगे।'

ये सब भगवान पंचपरमेष्ठी के साथ सौदेबाजी नहीं है तो और क्या है ?''

आचार्यश्री भक्तों को उनकी भूलों का अहसास कराते हुए अत्यन्त गंभीरता से बोले जा रहे थे और सभी श्रोता मंत्रमुग्ध से होकर अति जिज्ञासा से एकटक लगाये उनकी बात को सुन रहे थे।

आचार्यश्री ने कहा -''ज्ञान की महिमा तो अपरम्पार है ही, पर अज्ञान की महिमा भी कम नहीं है। जिनवाणी के कथनों का सही अभिप्राय न समझ पाने से कैसी-कैसी भूलें होती हैं ? स्वाध्याय करने वालों को भी इसका पूरा पता नहीं रहता।**(क्रमश:)**

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में छठवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई–बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : टोडरमलजी ने कितने प्रकार से कुगुरु का निरूपण किया है ?

उत्तर : टोडरमलजी ने कुल अपेक्षा, पट्ट अपेक्षा, भेष अपेक्षा इसप्रकार कुगुरु का निरूपण किया है।

प्रश्न : कुगुरु के संदर्भ में शिथिलाचार पोषक युक्तियाँ और उनका निराकरण दीजिये।

उत्तर : कुगुरु के संदर्भ में शिथिलाचार पोषक युक्तियाँ और उनका निराकरण निम्नानुसार है –

शंका – गुरु बिना तो निगुरा कहलायेंगे और वैसे गुरु इस समय दिखते नहीं हैं, इसलिये इन्हीं को गुरु मानना ?

समाधान – निगुरा तो उसका नाम है जो गुरु मानता ही नहीं तथा जो गुरु को तो माने; परन्तु इस क्षेत्र में गुरु का लक्षण न देखकर किसी को गुरु न माने तो इस श्रद्धान से तो निगुरा होता नहीं है।

शंका – जैन शास्त्रों में वर्तमान में केवली का तो अभाव कहा है, मुनि का तो अभाव नहीं कहा है ?

उत्तर – ऐसा तो कहा नहीं है कि इन देशों में सद्भाव रहेगा; परन्तु भरतक्षेत्र में सद्भाव कहते हैं, सो भरतक्षेत्र तो बहुत बड़ा है, कहीं सद्भाव होगा, इसलिये अभाव नहीं कहा है।

शंका – एक अक्षर के दाता को गुरु मानते हैं, तो जो शास्त्र सिखलायें व सुनायें उन्हें गुरु कैसे न मानें ?

समाधान – गुरु नाम बड़े का है। सो जिस प्रकार की महंतता जिसके सम्भव हो, उसे उस प्रकार गुरुसंज्ञा संभव है। जैसे – कुल अपेक्षा माता–पिता को गुरु संज्ञा है, यहाँ तो धर्म का अधिकार है, इसलिये जिसके धर्म अपेक्षा महंतता सम्भवित हो उसे गुरु जानना। धर्म नाम चारित्र का है, इसलिये चारित्र के धारक को ही गुरु संज्ञा है।

शंका – अब श्रावक भी तो जैसे सम्भव हैं वैसे नहीं हैं, इसलिये जैसे श्रावक वैसे मुनि ?

समाधान – श्रावक संज्ञा तो शास्त्र में सर्व गृहस्थ जैनियों की है। इसलिये गृहस्थ जैन श्रावक नाम प्राप्त करता है। मुनिसंज्ञा तो निर्ग्रन्थ के सिवा कहीं नहीं है। श्रावक के तो आठ मूलगुण कहे हैं, इसलिये मद्य, मांस, मधु, पाँच उदम्बरादि फलों का भक्षण श्रावकों के है नहीं, इसलिये किसी प्रकार से श्रावकपना तो सम्भवित भी है; परन्तु मुनि के अट्ठाईस मूलगुण हैं सो वेषियों के दिखायी ही नहीं देते, इसलिये मुनिपना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है।

शंका – हमारे अंतरंग में श्रद्धान तो सत्य है; परन्तु बाह्य लज्जादि से शिष्टाचार करते हैं, सो फल तो अंतरंग का होगा ?

समाधान – षट्पाहुड़ में लज्जादि से वन्दनादिक का निषेध बतलाया था, वह पहले ही कहा था। कोई जबरदस्ती मस्तक झुकाकर हाथ जुड़वाये, तब तो यह सम्भव है कि हमारा अंतरंग नहीं था; परन्तु आप ही मानादिक से नमस्कारादि करे, वहाँ अंतरंग कैसे न कहें ? अंतरंग में तो कुगुरु सेवन को बुरा जाने; परन्तु उनको व लोगों को भला मनवाने के लिये सेवन करे तो श्रद्धानी कैसे कहें ? इसलिये बाह्यत्याग करने पर ही अंतरंग त्याग संभव है। इसलिये जो श्रद्धानी जीव हैं, उन्हें किसी प्रकार से भी कुगुरुओं की सुश्रुषा आदि करना योग्य नहीं है।

प्रश्न : कुधर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : जहाँ हिंसादि पाप उत्पन्न हों व विषय–कषायों की वृद्धि हो वहाँ धर्म माने, सो कुधर्म जानना।

प्रश्न : इसमें मिथ्यात्वभाव किस प्रकार हुआ ?

उत्तर : तत्त्वश्रद्धान करने में प्रयोजनभूत तो एक यह है कि रागादिक छोड़ना। इसी भाव का नाम धर्म है। यदि रागादिक भावों को बढाकर धर्म माने, वहाँ तत्त्वश्रद्धान कैसे रहा ? तथा जिनआज्ञा से प्रतिकूल हुआ। रागादिभाव तो पाप हैं, उन्हें धर्म माना सो यह झूठा श्रद्धान हुआ, इसलिये कुधर्म के सेवन में मिथ्यात्वभाव है।

प्रश्न : पाप छोड़ने का क्या क्रम है ?

उत्तर : जिनधर्म में तो यह आम्नाय है कि पहले बड़ा पाप छुड़ाकर फिर छोटा पाप छुड़ाया है, इसलिये इस मिथ्यात्व को सप्तव्यसनादिक से भी बड़ा पाप जानकर पहले छुड़ाया है। **– संयोजक, पीयूष शास्त्री, जयपुर**

म.प्र. फैडरेशन द्वारा श्रावकाचार वर्ष

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा वर्ष 2016–17 को मनाये जा रहे श्रावकाचार वर्ष के अन्तर्गत दिनांक 25 नवम्बर को प्रथम परीक्षा ली गई।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर आधारित यह परीक्षा श्री दीपकराज जैन (प्रदेश मीडिया प्रभारी) एवं डॉ. विवेक जैन (संयोजक) के निर्देशन में स्वाध्याय भवन में ली गई। इस परीक्षा में छिन्दवाड़ा, सिवनी, सिंगोड़ी आदि अनेक स्थानों से लगभग 200 साधर्मियों ने भाग लिया।

फैडरेशन द्वारा मनाये जा रहे श्रावकाचार वर्ष के अन्तर्गत छिन्दवाड़ा सहित 108 स्थानों पर नयुवकों सहित सभी साधर्मीजन रत्नकरण्ड श्रावकाचार का नियमितरूप से स्वाध्याय शिक्षण कक्षाओं के माध्यम से कर रहे हैं। छिन्दवाड़ा में इसकी कक्षा प्रतिदिन रात्रि 9.30 बजे से स्वाध्याय भवन गोलगंज में संचालित की जाती है। फैडरेशन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने बताया कि श्रावकाचार वर्ष में पूरे प्रदेश से दस हजार परीक्षार्थी भाग ले रहे हैं, जिनमें सबसे अधिक विद्यार्थी छिन्दवाड़ा जिले के हैं।

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष की–

आँखों देखी...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट – कल आज और कल...

– अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

''दीपावली के अवसर पर सब लोग मुझे श्रीफल भेंट करते हैं और आज मैं तुम्हें मुक्ति का श्रीफल भेंट करता हूँ, लो यह मुक्ति का श्रीफल है, तुम्हें शीघ्रातिशीघ्र मुक्ति प्राप्त हो'' कहकर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने मानो डॉ. भारिल्ल के हाथ में अपना सर्वस्व दे दिया तथा कालजयी भविष्य के निर्माण की नींव भी रख दी।

किसी भी मिशन की आत्मा स्वप्न दृष्टा पुरुष में होती है तो सफलता उस स्वप्न को धरातल पर साकार करने हेतु किये गये कुशल निर्देशन, प्रबंधन एवं संचालन में होती है। जब 50 वर्षों तक लगातार ऐसा होता रहे तो ऐसे व्यक्ति महानायक कहलाते हैं तथा संस्था दिग्दिगन्त में प्रसिद्धि पाती है। डॉ. भारिल्ल एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को इस श्रेणी के महानतम युग प्रवर्तक के रूप में देखकर हम अचंभित हैं, अभिभूत हैं।

जब श्रेष्ठी श्री पूरनचंदजी गादिका ने गुरुदेवश्री के परामर्श पर डॉ. भारिल्ल से ''माटी की मूरत'' (पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का विशाल परिसर) को जीवंत तीर्थ बनाने का आग्रह किया और अपने अत्यंत निकटस्थ प्रभावशाली लोगों की अमूल्य सलाहों की उपेक्षा कर डॉ. भारिल्ल को असीमित कार्य स्वतंत्रता प्रदान की तब किसने जाना था कि उनका यह अनंत विश्वास जैन समाज एवं तत्त्वज्ञान के लिये कितना अमूल्य एवं सार्थक सिद्ध होगा। शायद उन्हें इसकी कल्पना हो भी और अपने जीवनकाल में ही उन्होंने इसे साकार होते हुए देखा।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने अनेक योजनायें कार्यान्वित की जो अपने आप में विलक्षण थीं, उनसे समस्त दिगम्बर जैन समाज में संपूर्ण क्रांति आ गई, जिनमें मुख्य है –

● तात्त्विक विद्वान तैयार करने का कारखाना ''पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय''।

● पाठशाला पढाने के लिये शिक्षक तैयार करने हेतु ''श्री वीतराग–विज्ञान शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर''।

● तत्त्वरसिक मुमुक्षुओं को समाज नीति का प्रशिक्षण देने हेतु ''प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर''।

● युवा वर्ग के जोश एवं वीर्य को अध्यात्म की ओर मोड़ने वाला ''अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन''।

● एकसाथ अनेक गाँवों में धूमधाम से तत्त्वज्ञान देने वाले ग्रुप शिक्षण शिविर।

● बच्चों में नियमित धार्मिक संस्कार प्रत्यारोपित करने वाली ''श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड एवं पाठशाला समिति''।

● अत्यल्प मूल्य पर संपूर्ण जैन वाङ्मय उपलब्ध कराने हेतु पुस्तक प्रकाशन विभाग।

● जैन समाज में सर्वाधिक सर्कुलेशन वाली तात्त्विक पत्रिका वीतराग–विज्ञान (मासिक) एवं पाक्षिक समाचार पत्र जैनपथप्रदर्शक का प्रकाशन।

● पर्वाधिराज दशलक्षण पर्व एवं अष्टाह्निका में संपूर्ण देश में विद्वान भेजना।

● टेलिविजन पर नित्य प्रात:काल प्रवचनों का प्रसारण आदि अनेकों गतिविधियाँ विगत 50 वर्ष से आयोजित हो रही है तथा देशभर के अनेक संस्थानों में ट्रस्ट के स्नातक विद्वान तो कार्य सम्हाल ही रहे हैं।

विगत 50 वर्षों में ट्रस्ट के सभी कार्यों ने जैन समाज पर जो गहरी अमिट छाप छोड़ी है, उसका कारण डॉ. भारिल्ल द्वारा अपनाई गई नीतियाँ हैं –

● प्रयोजनभूत ज्ञान का प्रचार एवं अज्ञान का शमन ही एकमात्र सुख प्रदायी उपाय है, सच्चा रास्ता मिलने पर प्राणी का संपूर्ण पुरुषार्थ स्वत: उसे पाने पर ढल जाता है।

● अनेक सहयोगी भी व्यक्ति विशेष की नियमित समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत रूप से नहीं कर सकते हैं; किन्तु एक सक्षम सुलझा हुआ विद्वान लाखों लोगों को सन्मार्ग पर लगा सकता है।

● भौतिक सुख सुविधा का प्राणी के सुख–दुख से संबंध नहीं है। मनुष्यों में पाये जाने वाले 99% दु:ख मानसिक एवं अज्ञानजन्य है। जो व्यक्ति निजात्म तत्त्व का सत्य स्वरूप समझेगा, वह सुखी होगा; अत: आत्मज्ञान–श्रद्धान प्रदायी ज्ञान जगत को सुलभ हो ऐसे कार्यक्रमों का निरंतर संचालन करते रहना।

● जगत में हर ओर अन्याय एवं अनीति हो रही है, सबके प्रतिकार में उलझना नासमझी है। जिस कार्य से सभी का कल्याण हो ऐसा रचनात्मक कार्य करते रहो, इसी से जगत सुखी होगा।

● विरोध प्रचार की कुंजी है, आपके सही कार्य का जितना विरोध होगा उतना आप लोगों तक पहुंचोगे। हाँ, अपने विरोध का प्रत्युत्तर देना सामने वाले का प्रचार करना है, वह मत करो। मात्र विरोध पर आधारित कोई मिशन सफल नहीं होता।

● वृद्धों से युवकों में तथा युवकों से बालकों में ग्रहणशीलता अधिक होती है एवं पूर्वाग्रह कम होते हैं; अत: बालकों एवं युवकों पर मेहनत फलदायी है।

● कोई भी अस्पर्श्य नहीं है, सभी भूले हुए भगवान हैं; अत: सभी को समभाव से सत्य समझने का अवसर देना चाहिये।

● किसी विषय के विशेषज्ञ विरोधी की सेवायें लेना अनुचित नहीं है। कषायवश किसी की योग्यता का लाभ न लेना अवश्य अनुचित हो सकता है।

● विशाल एवं कभी–कभी आयोजित हो सकने वाले कार्यक्रमों के स्थान पर छोटे, दैनिक, नियमित एवं दीर्घावधि वाली योजनायें जनसामान्य पर अधिक एवं स्थाई प्रभाव छोड़ती हैं। ऐसे जुड़ने वाले लोग समर्पित एवं पक्के होते हैं।

● अध्यात्म विद्या के क्षेत्र में मार्केट बहुत बड़ा और प्रतिस्पर्धा नगण्य है। अत: जो भी लोग यहाँ सक्रिय हैं, चाहे किन्ही कारणों से उनमें हमारा विरोध ही क्यों न हो, उनका कोई अन्य विकल्प समाज के पास नहीं है। अत: हर कार्यकर्ता को सराहने की आवश्यकता है, संबल की जरूरत है।

पचास वर्ष पूर्व जब डॉ. भारिल्ल ने कार्य आरम्भ किया, तब समाज के पास प्रचार हेतु इन्फ्रास्ट्रक्चर (संसाधन) ही नहीं था। समाज के पास तात्त्विक विद्वान, गूढ गंभीर विषयों पर तात्त्विक विश्लेषण वाला सत् साहित्य एवं अध्ययन–अध्यापन की सुविधाएं नगण्य एवं असंगठित थीं; अत: उन्होंने जैन जगत में मूलभूत ढांचे के निर्माण का महान कार्य किया। आज हमारे पास यह सब है।

अन्य विचारणीय पहलू है कि विगत पचास वर्षों में जनसामान्य के संस्कार, मूल्य एवं चिंतन प्रक्रिया में बहुत फर्क आया है। आज का व्यक्ति सामाजिक रूप से पूर्ण स्वतंत्र, पढा–लिखा एवं आत्मविश्वासी है। यह आपके प्रस्तुतिकरण पर निर्भर करता है कि वो आपको स्वीकारे या नकारे; पर आपके पास शायद दूसरा अवसर नहीं।

उक्त सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें आगामी 50 वर्ष की योजना का ब्लू प्रिंट तैयार करना चाहिये, ताकि हम सफलतापूर्वक कार्य कर सकें एवं प्रासंगिक बने रहें, जो मेरी मान्यता से कुछ ऐसा (निम्न) होगा –

महाविद्यालय –

● अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों में विविधता लाने हेतु प्रयत्न अर्थात् विविध क्षेत्र, समाज, आयवर्ग एवं पेशे सभी में विविधता लाने का प्रयत्न करना।

● विद्यार्थियों में उत्तम वक्तृत्व के साथ अच्छे विचारक, लेखक एवं शोधार्थियों के गुणों का भी विकास हो – ऐसी प्रणाली शामिल करना।

● सभी विद्यार्थियों को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं विधानाचार्य की ट्रेनिंग देना।

● प्रत्येक विद्यार्थी हिन्दी–संस्कृत के अतिरिक्त एक आंचलिक/विदेशी भाषा का भी जानकार हो ऐसा प्रयत्न करना। इससे भविष्य में हम विविध भाषाओं में जैन तत्त्वज्ञान का प्रचार–प्रसार करने में सक्षम हो सकेंगे।

● हमारे संस्थान में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों की संख्या बढे – ऐसे प्रयत्न करना ताकि और अधिक अच्छे छात्र हम ले सकें।

● प्रत्येक विद्यार्थी को अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात् एक वर्ष समाज में प्रयोगिक कार्य का अनुभव लेने हेतु प्रेरित करना तथा इसे इतना आकर्षक बनाना कि सभी यह करना चाहें।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन –

● युवकों के लिये रुचिकर लेकिन अध्यात्म उत्प्रेरक नये कार्यक्रमों की शोध–खोज, मॉडल तैयार करना एवं सभी शाखाओं में कार्यक्रम आयोजित हो सकें, इसके लिये पदाधिकारियों की ट्रेनिंग की व्यवस्था करना।

● जीवन के प्रत्येक मूलभूत अवसर/आयोजन के अनुकूल कार्यक्रम बनाना यथा–बर्थडे पार्टी, पिकनिक, पार्टियाँ, हॉस्पिटलाईजेशन में कक्षा लेना, मरण की बैठक आदि सभी अवसरों पर बोलने वाले विद्वानों की व्यवस्था।

● सभी शाखाओं में नियमित कार्यक्रम के संचालन एवं विकास हेतु केन्द्रों/शाखाओं की स्थापना।

● युवकों के रुचिकर सत् साहित्य, एप, वेबसाईट आदि का विकास एवं उपलब्धता सुनिश्चित करना।

सत् साहित्य प्रकाशन –

● उपलब्ध सत्साहित्य का समृद्ध अंग्रेजी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन करके विश्व की सभी प्रमुख लायब्रेरी एवं विश्वविद्यालयों में भेजने की व्यवस्था तथा वहाँ उनका पंजीकरण करवाना, ताकि यदि कोई जैनदर्शन का अध्ययन करना चाहे तो उसे मूल व सही बात पढने को मिल सके।

● अन्य भाषाओं के लिये भी ऐसे ही प्रयत्न करना।

● अत्याधुनिक जैन युवा एवं अन्य खुले विचारों वाले अध्ययनशील युवकों में जैनदर्शन के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो – ऐसे कार्यक्रम व साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन।

● सत्साहित्य के विशाल स्तर पर विवरण की व्यवस्था करना। यथा विश्व के बड़े प्रकाशकों के नाम के अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन।

पाठशाला एवं शिविर संचालन –

● शिविर पाठशाला एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों में वक्त की पाबंदी को प्रोत्साहित करना। अरुचिकर, अनुपयोगी घोषणाओं को समाप्त करना एवं इनके लिये अन्य मार्ग निकालने का प्रयत्न करना तथा इसका संयोजकों व प्रबंधकों को प्रशिक्षण देना।

● प्राथमिक कक्षायें प्रत्येक मौहल्ले में चले इसके लिये वहाँ के लोगों को ट्रेनिंग देकर तैयार करना।

● नई मूल्यांकन (परीक्षा) पद्धति का विकास, जो समझ को रेखांकित कर सके न कि रटने को।

अन्य –

● संपूर्ण देश की जैन संस्थाओं के अधिकारियों को, उनकी संस्था में विद्वानों की नियुक्ति द्वारा निरंतर धार्मिक व तात्त्विक कार्यक्रम करने हेतु तैयार करना तथा विद्वानों की व्यवस्था करना।

● संपूर्ण देश के प्रमुख शहरों में विद्वानों की नियुक्ति करके उन्हें अनेक कार्यक्रम करने के लिये तैयार करना तथा उनके निरीक्षण का प्रबंधन करना। कार्यक्रम दैनिक, साप्ताहिक व मासिक सभी तरह के होंगे।

● नई पीढी की रुचियों के अनुरूप नये सत्साहित्य का सृजन।

● नये शिक्षा मॉडल के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था करना।

उक्त सभी योजनाओं की विस्तृत रूपरेखा एवं प्लान मेरे पास तैयार है और भी अनेकों कार्य किये जा सकते हैं। आशा है हम सभी इस पर विचार करेंगे और समाज को, हमारे ट्रस्ट को आगामी 50 वर्ष तक नेतृत्व प्रदान करेंगे।

यह ट्रस्ट सदैव आगे बढता रहे – इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...।●

गुरुदेवश्री की पुण्य तिथि मनाई

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 20 नवम्बर को गुरुदेवश्री की पुण्य तिथि के अवसर पर गुरुदेवश्री के जीवन पर टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि विद्वत्गण भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर 10 वक्तओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसमें से उपाध्याय वर्ग के अन्तर्गत पल त्रिवेदी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग के अन्तर्गत रमन जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे। गोष्ठी का संचालन विशाल जैन एवं शुभम जैन ने किया।

इसके अतिरिक्त समयसार की 17–18 गाथा पर गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन एवं उनकी जीवनयात्रा का वीडियो भी सभी छात्रों को दिखाया गया।

(2) भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का स्मृति दिवस मनाया गया। प्रात: स्वर्णपुरी (सोनगढ) क्षेत्र की पूजन सामूहिकरूप से की गई। तत्पश्चात् डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन के सान्निध्य में सभा आयोजित की गई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनोपरान्त श्री महावीरजी चौधरी, श्री नेमीचन्दजी बघेरवाल, श्री प्रकाशचंदजी पाटनी, श्री भरतजी बंडी, श्री सुकुमालजी चौधरी, श्री पवनजी चौधरी, श्रीमती नरेन्द्राजी बंडी एवं श्रीमती सरिताजी चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये। इसके अन्तर्गत सभी वक्ताओं ने बताया कि भगवान आत्मा, पूर्णता के लक्ष्य से पूर्णता की प्राप्ति, उपादान से कार्यसिद्धि, क्रमबद्धपर्याय, शुभ भावों की हेयता, सभी द्रव्यों की स्वतंत्रता आदि विषयों की प्रसिद्धि गुरुदेवश्री ने सारे जीवनपर्यन्त की।

अन्त में अगली पीढी में संस्कार देने के संकल्प के साथ सभा विसर्जित हुई।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ चेतनबाग स्थित नंदीश्वर जिनालय में दिनांक 7 से 16 नवम्बर तक श्री तीन लोक मण्डल विधान एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी, ब्र. राकेशजी बीना, पण्डित संजयजी पुजारी, पण्डित सुदीपजी बीना, पण्डित शिखरचंदजी छिन्दवाड़ा आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 16 नवम्बर को श्री जिनेन्द्र रथयात्रा महोत्सव द्वारा विशाल शोभायात्रा निकाली गई एवं नवीन जिनबिम्बों को वेदी पर विराजमान किया गया। विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित मुकेशजी कोठादार एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा संपन्न हुये। **– सुनील जैन 'सरल', खनियांधाना**

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2016 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें –

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष – 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र–पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 9 अध्याय)
2. नयचक्र–उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

बण्डा–सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 26 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक सातवाँ महावीर संदेश जैन बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय जयपुर, धरसेन महाविद्यालय कोटा एवं अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के 25 शास्त्री विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

मध्यप्रदेश के बण्डा, कर्रापुर, बिनैका, बिजरी, बरा आदि ग्रामों में लगाये गये इस शिविर में लगभग 250–300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। इस शिविर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट का विशेष आर्थिक सहयोग रहा। सभी स्थानों पर शिविर की बहुत प्रशंसा व सराहना हुई।

आवश्यक सूचना

जिनवाणी चैनल पर हर रविवार प्रात: 11 से 12 बजे तक ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सूरत में हुए प्रवचनों का प्रसारण किया जायेगा। सभी साधर्मीजन लाभ लेवें।

2 दिसम्बर 2016, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन इतिहास पर संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित ऐतिहासिक दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़े मन्दिर में टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा रविवार, दिनांक 27 नवम्बर 2016 को **'जैनधर्म का प्राचीन इतिहास'** विषय पर विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. बी.एल.सेठी ने की। मुख्य अतिथि श्री विनयजी पापड़ीवाल ने टोडरमल स्मारक के निर्माण का इतिहास बताते हुए उसे तेरापंथी बड़े मंदिर की एक शाखा बताया। विशिष्ट अतिथि के रूप में वयोवृद्ध विद्वान श्री प्रसन्नकुमारजी सेठी ने अपनी सुन्दर काव्य-रचना प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने इस ऐतिहासिक दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़े मंदिर के ऐतिहासिक गौरव को बताया।

टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने समागत सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर डॉ. दीपकजी वैद्य, श्रीमती कमला भारिल्ल, ब्र. विमलाबेन के अतिरिक्त श्री ताराचंदजी सौगानी भी मंचासीन थे।

प्राचीन जैन इतिहास पर आयोजित इस गोष्ठी में उपाध्याय वर्ग से सजल जैन नोहटा (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग से श्रुति जैन जयपुर (शास्त्री प्रथम वर्ष) श्रेष्ठ वक्ता चुने गये।

गोष्ठी का मंगलाचरण यश जैन गुना ने एवं संचालन चर्चित जैन एवं स्पर्श जैन ने किया।

हार्दिक धन्यवाद

उदयपुर (राज.) निवासी श्री सुरेशचंद-कल्पना जैन के सुपुत्र **चि. विनम्र** का शुभ विवाह **सौ. चांदनी** के साथ दिनांक 16 नवम्बर को संपन्न हुआ।

इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद।

शोक समाचार

फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री पांडे ऋषभकुमारजी जैन का दिनांक 3 नवम्बर 2016 को 73 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

(क्रमश:)

बाल संस्कार शिविर संपन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला द्वारा दिनांक 22 से 30 अक्टूबर तक बाल संस्कार एवं पण्डित टोडरमल स्मारक स्वर्ण जयंती शिविर बड़े ही हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर ब्र. नन्हे भैया एवं स्थानीय शास्त्री विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

शिविर में प्रतिदिन पाठशाला के बच्चों द्वारा सामूहिक पूजन एवं जिनेन्द्र भक्ति की गई तथा दीपावली के अवसर पर पटाखे नहीं फोड़ने का नियम लिया गया। इसके अतिरिक्त शिविर में बच्चों को पण्डित टोडरमल स्मारक के बारे में जानकारी दी गई, जिससे प्रभावित होकर बच्चों ने 10वीं कक्षा के बाद टोडरमल स्मारक, ध्रुवधाम एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा में पढने की भावना व्यक्त की।

- विवेक शास्त्री, पिड़ावा

आगामी कार्यक्रम...

YOUTH CONVENTION ON 3 LOK

4th International Youth Convention to be held on 30 December 2016 to 1st January 2017 at Shree Kanji Swami Smarak Trust Deolali -Nasik (Mh.) by **Dr. Sanjeevji Godha, Jaipur** on Trilok Varnan. Pujan Vidhan by Pt. Vivek ji Shastri, Indore. Age group 15-45.

Registration on **www.mumukshu.org.**

For further enquiries :

Pt. Devang Gala - +91-9967424231

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com